16
महादेवी वर्मा

(जन्म : 1907 ई. / मृत्यु : 1987 ई.)

जीवन परिचय -

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 को फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ। इनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर में एक कॉलेज प्राध्यापक थे। माता हेमरानी देवी एक धर्मपरायण एवं कर्मनिष्ठ गृहिणी थी। महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल में तथा आगे की शिक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज इलाहाबाद में हुई। क्रास्थवेट कॉलेज में सुभद्राकुमारी चौहान के संपर्क में इनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत हुई। महादेवी का विवाह अल्प आयु में ही बरेली के पास नवाबगंज कस्बे के निवासी स्वरुपनारायण वर्मा के साथ हुआ लेकिन इनको वैवाहिक जीवन के प्रति विरक्ति–सी रही। आपने लंबे समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य के रुप में कार्य किया। इनका निधन 1987 में इलाहाबाद में हुआ।

महादेवी वर्मा छायावादी युग की प्रमुख कवयित्री हैं। इनके काव्य में अन्तर्मन की वेदना एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति एवं अज्ञात–अलौकिक सत्ता के प्रति समर्पण भाव मिलता है। इस कारण महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। काव्य लेखन के साथ इनको रेखाचित्र, संस्मरण एवं निबंध आदि गद्य विधाओं में भी सफलता मिली। रेखाचित्र एवं संस्मरण विधा को महादेवी जी ने नई ऊँचाई प्रदान की है। इन्होंने संस्मरणों में साधारण–से प्राणी एवं पशु–पक्षियों को प्रधान चरित्र बनाकर मार्मिक तथा भावात्मक शैली के बल पर इनको असाधारण व्यक्तित्व प्रदान किया है। इनकी शृंखला की कड़ियाँ (1942) रचना से हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुआत मानी जाती है।

प्रमुख रचनाएँ -

नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा (काव्यसंग्रह), अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार (रेखाचित्र संस्मरण) शृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था एवं अन्य निबंध, संकल्पिता, क्षणदा (निबंध संग्रह)।

पुरस्कार -

महादेवी वर्मा को सेकसरिया पुरस्कार (1934 नीरजा के लिए), मंगलाप्रसाद पारितोषिक (1943), पद्य भूषण (1956), ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982,यामा काव्य संग्रह हेतु) पद्य विभूषण (1988,मरणोपरान्त) आदि पुरस्कार प्राप्त हुए।

पाठ परिचय -

प्रस्तुत संस्मरण में महादेवी वर्मा ने 'गौरा' गाय के जीवन का बेहद सजीव वर्णन किया गया है। इस संस्मरण में पशु–पक्षियों के अपनत्व एवं कृतज्ञता जैसे मानवीय भावों को उद्‌घाटित किया गया है। गौरा का व्यक्तित्व जितना आकर्षक एवं भव्य था उसका अंत भी उतना ही करुण एवं मार्मिक हुआ। संस्मरण का अंत "आह मेरा गोपालक देश" से होता है जो समाज में व्याप्त ईर्ष्या एवं स्वार्थपरता की ओर गहरा व्यंग्य है जिसके कारण गौरा को असामयिक निर्मम मृत्यु प्राप्त हुई। 'गौरा' संस्मरण महादेवी वर्मा के 'मेरा परिवार' संस्मरण संग्रह में संगृहीत है।

गौरा

गौरा मेरी बहिन के घर पली हुई गाय की वयः सन्धि तक पहुँची हुई बछिया थी। उसे इतने स्नेह और दुलार से पाला गया था कि वह अन्य गोवत्साओं से कुछ विशिष्ट हो गई थी।

बहिन ने एक दिन कहा, तुम इतने पशु–पक्षी पाला करती हो–एक गाय क्यों नहीं पाल लेती, जिसका कुछ उपयोग हो। वास्तव में मेरी छोटी बहिन श्यामा अपनी लौकिक बुद्धि में मुझसे बहुत बड़ी है और बचपन से उनकी कर्मनिष्ठा तथा व्यवहारकुशलता की बहुत प्रशंसा होती रही है, विशेषतः मेरी तुलना में।

यदि वे आत्मविश्वास के साथ कुछ कहती हैं तो उनका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है। आश्चर्य नहीं, उस दिन उनके उपयोगितावाद संबंधी भाषण ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि तत्काल उस सुझाव का कार्यान्वयन आवश्यक हो गया।

वैसे खाद्य की किसी भी समस्या के समाधान के लिए पशु–पक्षी पालना मुझे कभी नहीं रुचा। बकरी, कुक्कुट, मछली आदि पालने के मूल उद्देश्य का ध्यान आते ही मेरा मन विद्रोह करने लगता है।

पर उस दिन मैंने ध्यानपूर्वक गौरा को देखा। पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे–छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों– जैसे कान, लम्बी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ, सब कुछ साँचे में ढला हुआ–सा था। गाय को मानों इटैलियन मार्बल में तराशकर उस पर ओप दी गई हो।

स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा की उज्ज्वलता देखकर ऐसा लगा, मानो उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो, जिसके कारण जिधर आलोक पड़ता था, उधर विशेष चमक उत्पन्न हो जाती थी।

गौरा को देखते ही मेरी पालने के संबंध में दुविधा निश्चय में बदल गई। गाय जब मेरे बँगले पर पहुँची, तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार–सा उमड़ आया। उसे लाल–सफेद गुलाबों की माला पहनाई, केशर–रोली का बड़ा–सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही–पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा–अर्चा का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, परन्तु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी, चमकीली और काली आँखों से जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखने वाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिए हों।

गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शनी थी, विशेषतः उसकी काली बिल्लौरी आँखों का तरल सौन्दर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। चौड़े, उज्ज्वल माथे और लम्बे तथा साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नीले जल के कुण्डों के समान लगती थीं। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों–जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक। महात्मा गाँधी ने 'गाय करुणा की कविता है', क्यों कहा, यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।

गौरा की अलस मन्थर गति से तुलना करने योग्य कम वस्तुएँ हैं। तीव्र गति में सौन्दर्य है परन्तु वह मन्थर गति के सौन्दर्य को नहीं पाता। बाण की तीव्र गति क्षण भर के लिए दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर सकती है, परन्तु मन्द समीर से फूल का अपने वृन्त पर हौले–हौले हिलना दृष्टि का उत्सव है।

कुछ ही दिनों में वह इतनी हिलमिल गई कि अन्य पशु–पक्षी अपनी लघुता और उसकी विशालता का अन्तर भूल गए। कुत्ते–बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में खेलने लगे। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान तथा आँखें खुजलाने लगे। वह भी स्थिर खड़ी रहकर और आँखें मूँदकर मानो उनके सम्पर्क–सुख की अनुभूति में खो जाती थी।

हम सबको वह आवाज से नहीं, पैर की आहट से भी पहचानने लगी। समय का इतना अधिक बोध उसे हो गया था कि मोटर के फाटक में प्रवेश करते ही वह बाँ–बाँ की ध्वनि में हमें पुकारने लगती। चाय, नाश्ता तथा भोजन के समय से भी वह इतनी परिचित थी कि थोड़ी देर कुछ पाने की प्रतीक्षा करने के उपरान्त रँभा–रँभाकर घर सिर पर उठा लेती थी।

उसका हमसे साहचर्यजनित लगाव स्नेह के समान ही निकटता चाहता था। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती, हाथ फेरने पर अपना मुख आश्वस्त भाव से कन्धे पर रख कर आँखें मूँद लेती। जब उससे दूर जाने लगते, तब गर्दन घुमा–घुमा कर देखती रहती। आवश्यकता के लिए उसके पास एक ही ध्वनि थी। परन्तु उल्लास, दुःख, उदासीनता, आकुलता आदि की अनेक छाया–छवियाँ उसकी बड़ी और काली आँखों में तैरा करती थीं।

एक वर्ष के उपरान्त गौरा एक पुष्ट सुन्दर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरु का पुतला–जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे, मानों गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया लालमणि; परन्तु उसे सब लालू के संबोधन से पुकारने लगे। माता–पुत्र दोनों निकट रहने पर हिमराशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे। अब हमारे घर में मानो दुग्ध–महोत्सव आरम्भ हुआ। गौरा प्रातः–सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी, अतः लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस–पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते–बिल्ली तक सब पर मानो 'दूधों नहाओ' का आशीर्वाद फलित होने लगा। कुत्ते–बिल्लियों ने तो एक अद्‌भुत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्ध–दोहन के समय वे सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते और महादेव उनके आगे उनके खाने के लिए निश्चित बर्तन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर आमन्त्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाप–नाप कर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता, जिसे पीने के उपरान्त वे एक बार फिर अपने–अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन–सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछलने–कूदने लगते। जिस दिन उनके आने में विलम्ब होता, वह रँभा–रँभाकर मानो उन्हें पुकारने लगती।

पर अब दुग्ध दोहन की समस्या कोई स्थायी समाधान चाहती थी। नौकरी में नागरिक तो दुहना जानते ही नहीं थे और जो गाँव से आये थे, वे अनभ्यास के कारण यह कार्य इतना भूल चुके थे कि घण्टों लगा देते थे। गौरा के दूध देने के पूर्व जो ग्वाला हमारे यहाँ दूध देता था, जब उसने इस कार्य के लिए अपनी नियुक्ति के विषय में आग्रह किया, तब हमने अपनी समस्या का समाधान पा लिया।

दो–तीन मास के उपरान्त गौरा ने दाना–चारा खाना बहुत कम कर दिया और वह उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल रहने लगी। चिन्तित होकर मैंने पशु–चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। वे कई दिनों तक अनेक प्रकार के निरीक्षण, परीक्षण, एक्सरे आदि द्वारा रोग का निदान खोजते रहे। अन्त में उन्होंने निर्णय दिया कि गाय को सुई खिला दी गई है, जो उसके रक्त–संचार के साथ हृदय तक पहुँच गई है। अब सुई गाय के हृदय के पार हो जाएगी तब रक्त–संचार रुकने से उसकी मृत्यु निश्चित है।

मुझे कष्ट और आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। सुई खिलाने का क्या तात्पर्य हो सकता है? दाना–चारा तो हम स्वयं देखभाल कर देते हैं, परन्तु संभव है, उसी में सुई चली गई हो। पर डॉक्टर के उत्तर से ज्ञात हुआ कि दाने–चारे के साथ गई सुई गाय के मुख में ही छिदकर रह जाती है गुड़ की बड़ी डली के भीतर रखी सुई ही गले के नीचे उतर जाती है और अंततः रक्तसंचार में मिलकर हृदय में पहुँच सकती है।

अन्त में, एक ऐसा निर्मम सत्य उद्‌घाटित हुआ, जिसकी कल्पना भी मेरे लिए संभव नहीं थी। प्रायः कुछ ग्वाले ऐसे घरों में, जहाँ उनसे अधिक दूध लिया जाता है, गाय का आना सह नहीं पाते। अवसर मिलते ही वे गुड़ में लपेटकर सुई उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर देते हैं। गाय के मर जाने पर उन घरों में वे पुनः दूध देने लगते हैं। सूई की बात ज्ञात होते ही ग्वाला एक प्रकार से अन्तर्धान हो गया, अतः संदेह का विश्वास में बदल जाना स्वाभाविक था। वैसे उसकी उपस्थिति में कानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असम्भव था।

तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरम्भ हुआ, जिसकी स्मृति–मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डॉक्टरों ने कहा, गाय को सेव का रस पिलाया जावे, तो सुई पर कैल्शियम जम जाने और उसके बचने की सम्भावना है। अतः नित्य कई–कई सेर सेव का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इंजेक्शन पर इंजेक्शन दिये जाते। पशुओं के इंजेक्शन के लिए सूजे के समान बहुत लम्बी मोटी सिरिन्ज तथा बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है। अतः वह इंजेक्शन भी अपने आप में 'शल्यक्रिया', जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यन्त शान्ति से बाहर और भीतर, दोनों ओर की चुभन और पीड़ा सहती थी। केवल कभी–कभी उसकी सुन्दर पर उदास आँखें के कोनों में पानी की दो बूँदें झलकने लगती थीं।

अब वह उठ नहीं पाती थी, परन्तु मेरे पास पहुँचते ही उसकी आँखों में प्रसन्नता की छाया–सी तैरने लगती थी। पास जाकर बैठने पर वह मेरे कन्धे पर अपना मुख रख देती थी और अपनी खुरदरी जीभ से मेरी गर्दन चाटने लगती थी।

लालमणि बेचारे को तो माँ की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रुचता नहीं था। वह तो अपनी माँ का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था, अतः अवसर मिलते ही गौरा के पास पहुँचकर या अपना सिर मार–मार, उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल–कूद कर परिक्रमा ही देता रहता।

मैंने बहुत से जीव–जन्तु पाल रखे हैं, अतः उनमें से कुछ को समय–असमय विदा देनी ही पड़ती है। परन्तु ऐसी मर्मव्यथा का मुझे स्मरण नहीं है।

इतनी हृष्ट–पुष्ट, सुन्दर, दूध–सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुंदर चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी क्षण निर्जीव और निश्चेष्ट हो जायेगी, यह सोचकर ही आँसू आ जाते थे।

लखनऊ, कानपुर, आदि नगरों से भी पशु–विशेषज्ञों को बुलाया, स्थानीय पशु–चिकित्सक तो दिन में दो–तीन बार आते रहे, परन्तु किसी ने ऐसा उपचार नहीं बताया, जिससे आशा की कोई किरण मिलती है। निरुपाय मृत्यु की प्रतीक्षा का मर्म वही जानता है, जिसे किसी असाध्य और मरणासन्न रोगी के पास बैठना पड़ा हो।

जब गौरा की सुन्दर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चलीं और सेव का रस भी कंठ में रुकने लगा, तब मैंने अन्त का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक इच्छा थी कि मैं उसके अन्त समय उपस्थित रह सकूँ। दिन में ही नहीं ; रात में भी कई–कई बार उठकर मैं उसे देखने जाती रही।

अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कन्धे पर रखा, वैसे ही एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया और मेरी बाँह पर से सरककर धरती पर आ रहा। कदाचित् सुई ने हृदय को बेधकर बन्द कर दिया।

अपने पालित जीव–जन्तु के पार्थिव अवशेष मैं गंगा को समर्पित करती रही हूँ। गोरांगिनी को ले जाते समय मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया, परन्तु लालमणि इसे भी खेल समझ उछलता–कूदता रहा। यदि दीर्घ – निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सके, तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी, 'आह, मेरा गोपालक देश!'

कठिन शब्दार्थ

वयः सन्धि	–	जवानी एवं लड़कपन के बीच की उम्र।
गोवत्सा	–	बछिया।
कुक्कुट	–	मुर्गा।
संक्रामक रोग	–	छूत से फैलने वाला रोग।
सुडौल	–	सुन्दर आकार।
चामर	–	चँवर।
ओप देना	–	शोभा बढ़ाना, चमकाना।
मन्थर गति	–	धीमी गति।
समीर	–	वायु।
साहचर्यजनित	–	संपर्क से उत्पन्न।
आश्वस्त	–	भरोसा देना।

आकुलता	–	व्याकुलता, बैचेनी।
श्वेत	–	सफेद।
वलय	–	घेरा।
कृतज्ञता	–	उपकार मानने का भाव।
ज्ञापन	–	जताना/बताना।
उत्तरोत्तर	–	लगातार, अनवरत।
उद्घाटित	–	प्रकट करना।
अन्तर्धान	–	लुप्त, गायब होना।
व्याधि	–	रोग।
मर्मव्यथा	–	मन की पीड़ा।
पयस्विनी	–	दूध देने वाली गाय।
निश्चेष्ट	–	अचेत, मूर्छित।
निष्प्रभ	–	चमक या आभा रहित।
मरणासन्न	–	जिसकी मृत्यु समीप हो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. महादेवी वर्मा किस युग की कवयित्री हैं ?
   (क) द्विवेदी युग (ख) छायावाद (ग) प्रगतिवाद (घ) प्रयोगवाद
2. गौरा के बछड़े का क्या नाम था?
   (क) लालमणि (ख) गोपालक (ग) समीर (घ) प्रियदर्शन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. लेखिका की बहन का नाम क्या है ?
4. 'गाय करुणा की कविता है' किसका कथन है ?
5. लेखिका को गाय पालने का सुझाव किसने दिया ?
6. गौरा के बछड़े (वत्स) का क्या नाम रखा गया ?
7. गौरा की बीमारी का क्या कारण था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. कौनसी समस्या स्थायी समाधान चाहती थी ? उसका क्या समाधान हुआ ?
9. "आह मेरा गोपालक देश" पंक्ति में निहित वेदना को स्पष्ट कीजिए।
10. गौरा का लेखिका के बंगले पर हुए स्वागत का वर्णन कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न -

11. 'गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शनी थी' पंक्ति के आधार पर गौरा के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वभावगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
12. 'गौरा की मृत्यु का संघर्ष' इस संस्मरण का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग है' स्पष्ट कीजिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों ..... उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।
    (ख) अपने पालित जीव–जन्म के पार्थिक .....उसकी प्रतिध्वनि कहेगी, 'आह, मेरा गोपालक देश!